रात्रीक्लास 7.2.68 ओमशांति शिवबाबा याद है?

शिवजयंति बच्चे मनाते हैं। कब पूछते भी होंगे तुमने 31/32 क्यों लिखा है? अगर पूछते हो तो लिखते.....पूछा फिर इस पर ऐसे समझाया। आजकल झूठ है बहुत , सच्च है थोड़ा। बच्चों को विचार–सागर–मंथन करना चाहिए। ऐसी क्या बात समझायें जिससे मनुष्य समझ जाये। ब्रह्माकुमारियां सच्च कहती हैं हम प्रजापिता के सन्तान हैं भाई–बहिन और शिवबाबा के सन्तान भाई2 हैं। जो भी आवे समझाना चाहिए हम आत्माएं सब शिवबाबा के सन्तान हैं। शरीरधारी हैं तो प्रजापिता ब्रह्मा के सन्तान हैं। इसलिए हम बहिन–भाई कहते हैं। पुरुषोत्तम संगमयुग पर है ही ब्राह्मण कुल। पहले बताना चाहिए हम सभी आत्माएं ब्रदर्स हैं। एक एक शिवबाबा के संतान शिववंशी हैं। फिर बाप भी निराकार ,हम भी निराकार। फिर साकार में है प्रजापिता ब्रह्मा। तो ब्रह्माकुमार–कुमारियां बहिन–भाई हुए। बाप ने ब्रह्मा द्वारा परिचय दिया है तब ही समझते हैं हम बहिन–भाई हैं। अभी हम हैं संगमयुगी। वह हैं कलियुगी। ऐसे2 विचार–सागर–मंथन कर समझाना चाहिए। आत्माएं तो सभी भाई2 हैं। एक ही माशूक है। बाकी सभी हैं आशुक। ऐसे नहीं दो/तीन माशुक हैं। नहीं, कायदा नहीं। सबका माशूक एक ही बाप है और श्रीमत भी जरूर मुख से देते हैं। बाप है भ्रष्ट से श्रेष्ठ बनाने वाला। वह परमपिता परमातमा ही हुआ। तुम समझाय सकते हो हम ब्रह्माकुमारियां हैं। तुम भी वास्तव में हो। पुरुषोत्तम संगमयुग पर बाप नये सिरे रचने आते हैं। ब्रह्मा द्वारा रचते हैं। पुरानी सु ही नई रचना रची। आत्माएं तो सब नई कोई हैं नहीं। यह सब पुरानी हैं और अविनाशी हैं। यह भी समझाया है दो बाप हैं जिससे वर्सा मिलता है। बुलाते भी हैं पतित–पावन ,दुःखहर्ता–सुखकर्ता आओ। अभी सभी हैं शूद्र। तमोप्रधान कलियुग। अभी तुम हो संगमयुगी ब्राह्मण। फिर ब्राह्मण ही देवता बनेंगे। विराट रूप भी तुम अच्छी रीत समझाय सकते हो। अभी नई दुनियां स्थापन हो रही है। पुरानी दुनियां का विनाश सामने खड़ा है। बुलाते भी हैं पतित–पावन आओ। वह बाप कहते हैं पवित्र बनो। मामेकम् याद करो। सबको बताओ सबका बाप एक ही है। उनका वर्सा जरूर चाहिए। बाप को याद करने से तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जावेंगे। आजकल करते2 काल खा जावेगा। चार्ट रखना अच्छा है। अगर समझते हो बिगर चार्ट हम तीखा जावेंगे। वह .....माया इसमें ही विघ्न डालती है। बाकी समझाना है बहुत सहज। अच्छा, बच्चों को गुडनाइट, नमस्ते।

<u>पत्र की कापी</u>– जालन्धर निवासी नूरे रत्नों यादप्यार बापदादा का स्वीकार करना जी। हरेक को टॉपिक पर भाषण करना है। राय है हरेक टॉपिक पर दो/एक बार रिहर्सल करे तो भाषण करेक्ट करेंगे। शिवबाबा की महिमा कि सर्व की सदगति दाता है। इसलिए सारे विश्व का सच्चा गुरू है। बाकी तो सभी भक्तिमार्ग दुर्गति के गुरू हैं। उतरती कला है। इस पर अच्छी रीत रोशनी डालना। मनुष्य की भक्तिमार्ग की गीता और सर्व की सदगति शिवबाबा की राजयोग सिखाने से होती है। इस प्वाइंट पर रोशनी (देनी) है। परमपिता परमात्मा द्वारा सदगति और भक्तिमार्ग की गीता द्वारा दुर्गति कैसे होती है इस प्वाइंट पर अच्छा समझाना है। एरोप्लेन आदि से भी जो पर्चे .....भी मुरली से अच्छी प्वाइंट निकाल लिखनी है। बाबा रोज कुछ न कुछ समझाते रहते हैं। हरेक अपने से .....हम सतयुगी स्वर्गवासी हैं या कलियुगी नर्कवासी हैं? इत्यादि। यह बाबा भाषण में बोला है। ज्ञान दिन, भक्ति रात। सदगति ,दुर्गति क्लीयर बताना है। विनाशकाले विपरीत बुद्धि और प्रीत बुद्धि की भी प्वाइंट क्लीयर करके बताना। कौड़ी और हीरे जैसे वाला प्वाइंट भी समझानी है। हद के बाप से हद के जायदाद और बेहद के बाप से बेहद की जायदाद यह कान्ट्रास्ट क्लीयर कर बताना है। आस्तिक–नास्तिक पर भी समझाय सकते हैं। धणके–निधणके पर भी। सयाने चतुर तो हो ही। अब रुहानी सर्विस पर ध्यान ,बाबा की लिखावट पर ध्यान। अच्छा, सभी बच्चों को यादप्यार देना। ओम।